IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री जीवन एवं चंद्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियाँ

शोध निर्देशक ठ
डॉ० मंजूशुक्ला(सह आचार्य)
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
कोटवा–जमुनीपुर, दुबावल
प्रयागराज।

षोध छात्रा
उषा कुमारी वर्मा

हिंदी कहानी अपनी व्याप्ति एवं जातीय चेतना के कारण भारतीय साहित्य में सबसे समर्थ और व्यापक स्थान ग्रहण कर चुकी है। हिंदी गद्य की अधिकांश श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद, जो अन्य भारतीय भाषाओं में होता है, वह इस बात का प्रमाण है। 19वीं शताब्दी से विकसित हिंदी गद्य आज अत्यंत व्यापक स्वरूप ग्रहण कर चुका है। अपने आरंभिक समय में हिंदी गद्य का विकास सीमित था। उसमें विधाओं की संख्या कुछ गिनी चुनी ही थी। हिंदी गद्य की आरंभिक विधाओं में जो प्रमुख थीं उनमें– उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबंध और नाटक का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। किंतु सामाजिक जीवन में बढ़ते गद्य के महत्व और साहित्य के विकास एवं मानवीय चेतना के बढ़ते प्रसार के कारण नवीन गद्य विधाओं का उद्भव हुआ। इन नव विकसित गद्य विधाओं में आत्मकथा,जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा–वृतांत, रिपोर्ताज और पत्र–साहित्य आदि का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। इन विविध विधाओं से आगे बढ़ता हुआ हिंदी गद्य आज साहित्य का सबसे प्रमुख हिस्सा है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हिंदी साहित्य के एक तिहाई से अधिक हिस्से पर हिंदी गद्य का कब्जा है। यहीं पर आचार्य शुक्ल द्वारा दिया गया आधुनिक काल का नाम 'गद्य काल'भी अत्यंत सार्थक और औचित्यपूर्ण सिद्ध होता है।

अनेक विधाओं में कहानी की स्थिति शुरू से ही अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। कहानी की बुनावट और बनावट कुछ ऐसी है कि यह लेखनकाल आरंभ होने के पहले जितनी लोकप्रिय रही होगी आज भी कमोबेश उसकी ऐसी ही स्थिति है। बल्कि दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आज पूंजीवादी समाज और बढ़ते समयाभाव में कहानी और अधिक प्रासंगिक हो गई है। वर्तमान समय में जब किसी व्यक्ति के पास महाकाव्य या खण्डकाव्य जैसे लंबे या बड़े उपन्यासों को पढ़ने के लिए समय नहीं है;ऐसे समय में सहृदय पाठकों की उस साहित्यिक भूख को कहानी के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में कहानी एक सटीक विधा है।कालक्रम की दृष्टि से यदि देखा जाए तो कहानी का विकास द्विवेदी युग में होता है। किंतु आश्चर्य की बात यह है कि अपने जन्म के 15 वर्षों बाद ही चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी की 'उसने कहा था' जैसी कालजयी रचना लिखीजो अपने समय और समाज को अतिक्रमित करते हुए अपनी श्रेष्ठ कलात्मकता को सिद्ध करती है।इस प्रकार हम देखते हैं कि द्विवेदी युग से अपनी विकास यात्रा आरंभ करने वाली हिंदी कहानी आज हिंदी साहित्य की सबसे समृद्ध

विधाओं में से एक है। कहानी के स्वरूप पर अपना मत व्यक्त करते हुए राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने लिखा है कि–"कहानी गद्य का ऐसा प्रकार है जिसमें जीवन के किसी एक प्रसंग, किसी एक घटना या मनःस्थिति का वर्णन होता है। यह वर्णन अपने आप में पूर्ण होना चाहिए––––––––––––––––––वह ऐसा आख्यान है जो यथार्थ का उद्घाटन करता है,आकार में छोटा होता है, जिसे एक बार में पढ़ा जा सकता है और जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव डालता है।"1 सुप्रसिद्ध विद्वान प्रोफ़ेसर सत्यकाम जी के अनुसार–" कहानी में यथार्थ की स्थिति बिजली की चमक की तरह होती है जहाँ यथार्थ का कोई क्षण सहसा उद्घाटित हो जाता है।उपन्यास में मनुष्य के जीवन, उसके सामाजिक संबंधों,उसकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं आदि के अवलोकन, विश्लेषण और अंकन के लिए पर्याप्त अवकाश होता है। कहानी में यथार्थ की अभिव्यक्ति इतने व्यापक पैमाने पर नहीं होती। कहानी में यथार्थ उद्घाटित ही हो पाता है, विश्लेषण नहीं हो पाता।"2

कहानी के प्रमुख तत्वों पर यदि विचार किया जाए तो कहानी में भी वे ही सारे तत्व पाए जाते हैं जो की उपन्यास में। अंतर केवल घटना के चरित्र–चित्रण और विस्तार को लेकर रहता है। कहानी कला के तत्वों पर अपना मत व्यक्त करते हुए राधा वल्लभ त्रिपाठी जी ने लिखा है– "प्रत्येक कहानी में यह तत्व न्यूनाधिक रुप में रहते हैं। इनमें से कुछ तत्व निबंध में भी रहते हैं।कहानी और निबंध में मुख्य अंतर यह है कि निबंध में प्रतिपाद्य विषय स्पष्ट रहता है कहानी में उसका प्रयोजन प्रायः कलात्मक विन्यास में छिपा रहता है।"3

हिंदी महिला कहानी साहित्य के विकास में चंद्रकिरण जी का अन्यतम योगदान है। चंद्रकिरण जी के पूर्व हिंदी महिला कहानी साहित्य के क्षेत्र में बहुत कम नाम मिलते हैं। जो नाम उपलब्ध भी हैं, उनका साहित्य उतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं है। यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो चंद्रकिरण जी का साहित्य अपने पूर्ववर्ती लेखिकाओं से प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है। यहाँ पर यह बात उल्लेख कर देना आवश्यक है कि प्रभूत मात्रा में होने के बाद भी चंद्रकिरण जी के साहित्य में कोई हल्कापन नहीं है। उन्होंने अपने समय में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, हरिवंश राय बच्चन और सुमित्रानंदन पंत जैसे अनेक चोटी के साहित्यकारों के संसर्ग से जो संस्कार अर्जित किया था, वह भी उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने अपने समय और समाज की अनेक जटिल और द्वंद्व पूर्ण समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। स्वयं एक महिला होने के कारण उनकी कहानियों में नारी समस्याओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। उनकी अधिकांश कहानियाँ स्त्री जीवन के आसपास ही घूमती हैं। किंतु उनकी संपूर्ण कहानियाँ केवल नारी जीवन पर ही केन्द्रित हैं ऐसा नहीं है। नारी जीवन के अतिरिक्त पुरुषों कोभी केंद्र में रखकर भी कई कहानियों की रचना उन्होंने की है। इसके साथ ही समाज के अन्य वर्गों और समुदायों की भावनाओं का अंकन भी किया है।

उनकी कहानी यात्रा का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने समय के साथ बदलती हुई स्त्री चेतना को अपनी कहानियों में मार्मिक रूप से चित्रित किया है। चंद्रकिरण जी की कहानियों में सामाजिक दृष्टिकोण अपने यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। उनके भीतर दृष्टिकोण को लेकर किसी प्रकार की उहा–पोह की स्थिति नहीं है। अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण के कारण उनके पात्रों और चरित्रों में एक प्रकार का द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इनके स्त्री जीवन को चित्रित करने वाली अनेक कहानियों में आर्थिक दुर्बलता,सामाजिक एवं नैतिक अंधविश्वास के चक्र में पिसती हुई स्त्रियों का यथार्थ चित्रण मिलता है।इनकी कहानियों में एक प्रकार से व्यक्ति चेतना का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। इनके स्त्री पात्र सामाजिक चेतना से

व्यक्ति चेतना की तरफ बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। इसे आधुनिक समाज का प्रभाव भी कहा जा सकता है। जहाँ सामाजिकता से वैक्तिक्ता को अधिक महत्व प्रदान किया जाने लगा है। आधुनिक समाज में उत्पन्न होने वाली विसंगतियों, विद्रूप, शोषण एवं अन्याय इनकी कहानियों में जीवन्त रूप से चित्रित पाया जाता है। इस संपूर्ण चित्रण में भी विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है। इन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं को छुआ है। उन्होंने अपनी रचनाओं में उसे जीवंत रूप से उतार दिया है। विशेष रूप से उन कहानियों में जिनकी नायिका कोई स्त्री है। इनकी अनेक कहानियों में इनकी सजग, आत्मनिर्भर एवं तेजस्वी नायिका के सामने अनेक पुरुष पात्र व्यक्तित्वहीन प्रतीत होते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि चंद्रकिरण जी की कहानियों में सामाजिक यथार्थ की मर्मपूर्ण एवं जीवंत अभिव्यक्ति हुई है।रिना रमेश सुरडकर के शब्दों में –"व्यक्ति को केंद्र में रखकर चलने वाली सौनरेक्सा जी की कहानियाँ कई बार सामाजिक समस्याओं के धरातल पर भी खरी उतरती हैं। उनकी अधिकतर कहानियों में घटना प्रधानता है। घटनाओं के माध्यम से ही वह अपने नारी पात्रों की मूल संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं। कई बार उनकी कहानियों में नारी संवेदना को प्रतीकों और संकेतों में व्यक्त किया गया है। जिसके कारण उनके प्रतीक और संकेत कभी–कभी कुछ सीमा तक दुर्बोध्य लगते हैं। तथ्य तो यह है कि सौनरेक्सा जी की संवेदनाएँ अनुभूतियों से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। उनकी कहानियों में आए नारी पात्र ऊपर से हँसते हैं किंतु भीतर–भीतर ही किसी न किसी द्वंद्व से ग्रस्त रहते हैं। उनके नारी चरित्र की यह विडंबना ही है कि वह किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में घबराती हैं। यदि किन्ही स्थितियों में निर्णय लेते भी हैं तो कई बार उससे पीछे हट जाती हैं। ऐसे स्थलों पर उन नारी चरित्र की मूल संवेदना बड़े मार्मिक रूप में व्यक्त होती है। इसका कारण यह है कि उनकी कहानियों के नारी चरित्र मध्यवर्गीय मानसिकता को लेकर जीते हैं। उनके नारी चरित्र सदा ही अप्राप्य को प्राप्त करने के लिए उत्तेजित रहते हैं।अधूरेपन की पीड़ा को झेलती हुई उनकी नारियाँ अपने मन की संवेदना को भी पूरी तरह अभिव्यक्त करने में भी असमर्थ हो जाती है।"4चंद्रकिरण जी ने अपनी कहानियों में संवेदना का पल्ला कभी नहीं छोड़ा। इन्होंने अपनी कहानियों में संवेदना की गहन एवं अनुभूति पूर्ण चित्रण करती हैं। वर्तमान समय में प्रचलित अंधानुकरण और पाश्चात्य सभ्यता की अतिशय नकल को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। उनका स्पष्ट रूप से मानना था कि–" आधुनिकता के नाम पर नग्नता,बीभत्स व कुंठा का कुत्सित चित्रण साहित्य में मुझे स्वीकार नहीं। कोरी भावुकता ने मुझे कभी आलोकित नहीं किया।"5 चन्द्रकिरण जी के उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि स्वच्छंदता के नाम पर नग्नता को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

स्त्रियों के सहज देह धर्म की जो चर्चा परवर्ती हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने बड़े जोर–शोर से उठाया था, उसे चंद्रकिरण जी ने उनसे काफी समय पहले समझ कर संकेतों में उसकी चर्चा कर दी थी। उसमें किसी प्रकार का प्रतिरोध या नग्नता नहीं थी। उन्होंने स्त्री समाज को जकड़ने वाले सामाजिक,नैतिक, धार्मिक बंन्धनो को बहुत गहराई से समझ लिया था। उनको इस बात का पूरा विश्वास हो गया था कि इन सामाजिक,नैतिक,धार्मिक बंन्धनो को छिन्न–भिन्न किए बिना स्त्रियों के जीवन में सुधार नहीं लाया जा सकता है। इसी कारण उन्होंने इनको तोड़ने का यथा संभव प्रयत्न अपने कहानी साहित्य में किया है। उनके कहानी साहित्य में किसी प्रकार के अश्लील और गंदे चित्र नहीं दिखाई देते हैं। स्त्री समाज को लेकर जो भी रचनाएँ उन्होंने की हैं उसका एक स्पष्ट उद्देश्य है।उनका मानना था कि स्त्रियों को आत्मनिर्भर और

सशक्त बनाने के लिए शिक्षित होना सबसे अधिक आवश्यक है। महिलाओं को जिस दिन शिक्षित कर दिया जाएगा उनकी आधी समस्याओं का हल अपने आप निकल आएगा। इसी कारण उनके महिला पात्र अनेक मुसीबतों और परेशानियों को झेलते हुए भी अपनी संतानों की शिक्षा के प्रति अत्यधिक सजग रहते हैं।

चंद्रकिरण जी के कथा साहित्य में घटनाओं का संकलन मुख्य रूप से समाज के विभिन्न वर्गों से किया गया है। उन्होंने अपने कहानी साहित्य में विभिन्न पात्रों के माध्यम से विविध प्रकार की सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। भारतीय परंपरा में परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। स्वस्थ्य समाज के लिए स्वस्थ्य परिवार का होना आवश्यक माना गया है। प्राचीन समय में जहाँ संयुक्त परिवार, परिवार की ताकत हुआ करते थे, वही बदली हुई परिस्थिति में एकाकी परिवारों का चलन बढ़ गया। बढ़ते आधुनिकतावाद और पूंजीवादी समाज में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई कि हमारे समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार धीरे–धीरे बिखरने लगे। वर्तमान समय में बढ़ते उपभोक्तावाद के दबाव के कारण अब संयुक्त परिवार से एकल परिवार और एकल परिवार से खंडित परिवार निर्मित होने लगे हैं। अब ऐसे परिवार बनने लगे हैं जिनमें प्रत्येक व्यक्ति की महात्वाकांक्षा पूरी नहीं हो पाती। इस तरह परिवार में सुख और शांति कभी आ नहीं पाती है।

चंद्रकिरण जी ने अपनी कहानियों में ऐसे खंडित परिवार की कथा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। उन्होंने अनेक ऐसी परिस्थितियों का वर्णन किया है जिसमें अनेक परिवार खंडित होते हैं और अनेक परिवार जुड़ते भी हैं।इसके साथ यह भी स्पष्ट कर देना उचित है की चंद्रकिरण जी का मत संयुक्त परिवार की तरफ अधिक झुका हुआ प्रतीत होता है।'जवान मिट्टी' एक ऐसी ही कहानी है। इस कहानी की नायिका बिंदो को अपने परिवार और समाज से जो यातनाएँ और कष्ट मिलता है उसी का यथार्थ वर्णन इसमें किया गया है। बिंदो की माँ को यह चिंता सदैव परेशान करती है कि अकेली लड़की का क्या होगा ? यदि मुझे कुछ हो गया तो इस अकेली लड़की को कौन आश्रय देगा। अपनी इस चिंता को दूर करने के लिए वह बिंदो का विवाह कर देती हैं। किंतु भाग्य में कुछ और ही लिखा था। विवाह के बाद भी बिंदो को वह मान–सम्मान और प्रेम नहीं मिलता है। दो वक्त की रोटी के लिए भी वह तरस जाती है। परिवार के भीतर भी दर–दर की ठोकर खाने पर मजबूर है।" दो वक्त की रोटी और दो कपड़ों के लिए वह रात–दिन काम करती है फिर भी वह गाली और मार क्यों खाती है?" 6 बिंदो की ससुराल में उसे इतनी यातना दी जाती है कि वह यह नहीं समझ पाती कि इस परिवार को कैसे खुश रखा जाए? वह सोचती है कि अगर मैं बाहर मजूरी करुँ तो इससे आराम से दो वक्त की रोटी मिल सकती है।एक स्त्री के जीवन की समस्या केवल मायके में ही नहीं रहती। ससुराल से वापस आने पर भी उसे अनेक दुश्चरित्र व्यक्ति घात लगाए बैठे रहते हैं। कब उनको मौका मिले और वे अपनी हवस का शिकार उसे बना लें।

बिंदो के बाप के गुजर जाने के बाद गाँव के चौधरी ही उसकी देखभाल करते हैं। वैसे चौधरी साहब की नियत भी बहुत अच्छी नहीं थी। फिर भी चौधरी साहब उसके पिता के न रहने पर उस परिवार के कर्ता–धर्ता बन गए थे। उन्होंने अपने गले की परेशानी हटाने के लिए बिंदो का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया। कुछ समय बाद बिंदो के अधेड़ पति का स्वर्गवास हो जाता है। फिर बिंदो ऐसे चौराहे पर आकर खड़ी हो जाती है जहाँ पर कोई रास्ता उसे समझ में नहीं आता। थक हार कर वह अपनी माँ के घर वापस आ जाती है। कुछ दिन बाद बिंदो और उसकी भाभी में मनमुटाव हो जाता है। बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि बिंदो और

उसकी माँ अलग अपनी रोटी बनाने लगती हैं। यहाँ पर आकर बिंदो न केवल स्वयं को संभालती है वरन अपनी माँ को भी सहारा देती है। यहीं पर आकर कहानी समाप्त हो जाती है। इस कहानी में लेखिका ने न केवल नारी जीवन की संघर्षों का यथार्थ चित्रण किया है अपितु उसे इन संघर्षों से बचने के लिए आत्मनिर्भर बनने का संदेश भी दिया है। आत्मनिर्भर बनकर ही महिलाएँ अपना और अपने अभिभावकों और बच्चों की भी समुचित देखभाल कर सकती हैं।

इसी प्रकार की एक कहानी 'सपना टूट गया' है। यह कहानी भी स्त्रियों के संघर्ष एवं शोषण को बहुत यथार्थता के साथ रुपायित करती है। यह कहानी जोहरा नाम एक ऐसी स्त्री की है जो वेश्या है। वेश्या होने पर भी जोहरा एक सचेत और दूर दृष्टि वाली महिला है। जोहरा का जीवन भले ही कोठे पर बीता है लेकिन वह अपनी बेटी जूही को इस पेशे में नहीं आने देना चाहती। वह चाहती है कि उसकी पुत्री समाज में अन्य महिलाओं के समान लिख–पढ़ कर आत्मनिर्भर महिला बने। किंतु जोहरा के सारे सपनों पर उस समय पानी फिर जाता है जब कोई भी सरकारी स्कूल जूही को दाखिला देने को तैयार नहीं होता है। अंत में थक–हार कर जोहरा उसे अपने कोठे पर महफिल के लिए तैयार करने पर विवश होती है। जोहरा कहती है कि–" चलिए–चलिए उस्ताद जी अब सोचना क्या है? यह कोई कोठे की महफिल नहीं जहाँ रुपयों की बरसात होनी बाकी हो। अपना तबला उठाइए और जूही बाई जी समेत चलते–फिरते नजर आइए। सांस्कृतिक समारोहों में ऐसी–वैसी लड़कियों का क्या काम? इस साली आजादी का भी बेड़ा गर्क हो–सरकारी स्कूलों में भले घरों की लड़कियों के साथ कोठे वालियों की बेटियाँ भी पढ़ने लगी।" 7

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि इनकी अनेक कहानियों में स्त्री संघर्ष एवं शोषण का चित्रण किया गया है। उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त 'न खुदा ही मिले, न बिसाले सनम', आदमख़ोर, किराए की माँ, खूंटे की गाय, किसी की करनी किसी की भरनी, लॉटरी,आदि अनेक कहानियों का नाम लिया जा सकता है। इनके पात्र अपने क्रिया–कलापों द्वारा मध्यवर्गीय जीवन की आशाओं–आकांक्षाओं का यथार्थ प्रतिनिधित्व करते हैं। इन कहानियों के माध्यम से चंद्रकिरण जी ने न केवल मध्यवर्गीय समाज में पनपने वाली असंगतियों एवं विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। अपितु मध्यवर्गीय समाज को एक नई दिशा देने का सार्थक प्रयास भी किया है। इन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के अनेक ऐसे पहलुओं को भी अपनी कहानियों में स्थान दिया है जिन तक साहित्य अभी नहीं पहुँचा था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो साहित्यिक संवेदना के लिए ऐसे स्थान बिल्कुल नए थे। इनकी कहानियों की नायिकाओं के जीवन संघर्ष और उनकी जिजीविषा को देख कर हमारे समाज को एक आदर्श संदेश भी प्राप्त होता है। इनके प्रत्येक पात्र जो जीवन यात्रा में संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। यह बात अवश्य है कि उनका कोई भी लक्ष्य आसानी से प्राप्त नहीं होता। किंतु परिस्थितियों के सामने वे कभी हार नहीं मानते।वह उससे जूझते–टकराते हुए आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि चंद्रकिरण जी के कहानी साहित्य में स्त्री संघर्ष और शोषण का यथार्थ,प्रामाणिक और जीवंत चित्रण किया गया है।

संदर्भ संकेत

1. साहित्यशास्त्र–(संपादक) राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद अरविंद मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण– 2002, पृष्ठ– 23
2. हिंदी कहानी का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ–21
3. साहित्यशास्त्र–(संपादक) राधा वल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, अरविंद मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण– 2002, पृष्ठ–24
4. मोहन राकेश की कहानियों में नारी चित्रण– डॉ. राव साहब जाधव, अभिव्यक्ति प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण–2018 –भूमिका से
5. मेरी प्रिय कहानियाँ– चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पूर्वोदय प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण– 2011, पृष्ठ–11
6. उपर्युक्त, पृष्ठ–65
7. सपना टूट गया–(उधार का सुख– कहानी संग्रह) चंद्रकिरण सौनरेक्सा, नालंदा प्रकाशन, मयूर विहार एक्सटेंशन प्रथम, नई दिल्ली,संस्करण– 2011, पृष्ठ–120